Shodh Sari-An International Multidisciplinary Journal

@2022 International Council for Education Research and Training
2022, Vol. 01, Issue 01, 89-93
ISSN: 2959-1376
https://doi.org/10.5281/zenodo.7747888

वर्तमान में अध्यापन की समस्याएँ

किशोर कवंल, प्राध्यापक रा. व. मा. वि. फतेहगढ़, जींद, हरियाणा

सारांश

यद्यपि फोन, कम्प्यूटर, टेलीविजन आदि द्वारा अध्यापकों ने छात्रों को शिक्षित करने का जटिल व मुश्किल प्रयास किया परन्तु यह प्रयास उतना सार्थक व उपयोगी सिद्ध नहीं हो सका जितनी इसकी अपेक्षा की गई थी। इस असफलता के कारण बहुत थे जैसे, सभी विद्यार्थियों के पास जरूरी उपकरणों का न होना, बिजली या इंटरनेट का न होना आदि आदि। इस प्रयास में असफलता तो मिली ही अपितु इस व्यवस्था ने तो एक अलग ही प्रकार की कुव्यवस्था का भयंकर रूप धारण कर लिया। बच्चे इंटरनेट के न केवल आदि हो गए बल्कि शिक्षा के अतिरिक्त अन्य गैर जरूरी सामग्री की जद में आकर अपना और अधिक नुकसान करने लगे। आंखों की बीमारियाँ लगने लगी व मानसिक विकार भी डराने लगे हैं। कहने का तात्पर्य यही है कि ये वैकल्पिक व्यवस्था ही अंततः जी का जंजाल बन गई जिसमें हमारे नौनिहाल पिसते नजर आ रहे हैं अर्थात फायदे की जगह हानि ही सर्वत्र अधिक हुई है।

मुख्य शब्दः- अध्यापन, शिक्षण-संस्थान, चुनौतियाँ, वैचारिक, महा देश, अधिगम

प्रस्तावना

किसी भी देश, समाज या समूह की तरक्की, खुशहाली, जीवन-प्रत्याशा एवं सम्पन्नता उसके शैक्षणिक मानकों के मापदंड पर निर्भर करती है। शिक्षा का समग्र प्रसार एवं सुचार क्रियान्वयन देश व समाज के वर्तमान एवं भविष्य की चुनौतियों व आवश्यकताओं के निवारण का मार्ग प्रस्तुत करता है। भारत जैसे विशाल, वैभिन्य से पूर्ण एवं विकास की डगर पर निकले देश के संदर्भ में शिक्षा एवं इसका प्रबंधन और अधिक जटिलताओं से गुम्फित हो जाता है। बृहत जनसंख्या, अनेक भौगोलिक स्वरूप, नानाविध भाषाएँ, भिन्न-भिन्न प्रकार के धर्म-सम्प्रदाय एवं जीवन-प्रणालियाँ आदि सबको एक माला सरीखी सुंदरता में पिरोना अच्छी शिक्षा-प्रक्रिया, शैक्षणिक नीति एवं पुख्ता प्रबंधन के बिना असम्भव ही है।

शैक्षणिक प्रक्रिया की प्रत्यक्ष कारगर उपयोगिता को जानना चाहें तो यह विद्यार्थी एवं अध्यापक के बीच होने वाले अंतर-व्यवहार के परिणाम का प्रतिफल ठहरती है। विद्यार्थी और अध्यापक के बीच का उत्तम सम्बंध, लाभप्रद क्रियाकलाप तथा उपयोगी वैचारिक आदान-प्रदान इस समस्त प्रक्रिया की सफलता का प्रतिरूप होता है, इसलिए छात्रों व अध्यापकों के परस्पर सम्बन्धों, व्यवहारों एवं शैक्षणिक सहयोग पर चर्चा करना अत्यंत आवश्यक व समीचीन हो जाता है।

@2022 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2022, Vol. 01, Issue 01, 89-93
https://doi.org/10.5281/zenodo.7747888

आप सभी को विदित है कि हमारा देश ही नहीं अपितु समस्त विश्व 'कोरोना' नाम की भयानक महामारी के क्रूर आक्रमण से गुजरा है। विशेषतः हमारे देश में इस महामारी ने जिस तरह का उत्पात मचाया है, और जिस प्रकार से इस महामारी के कारण देश की समस्त व्यवस्थाएँ प्रभावित हुई हैं वैसा आनुपातिक रूप से अन्यत्र कम ही देखने को मिला है। इस प्राकृतिक विडंबना के कारण बाकी सब व्यवस्थाओं के ध्वस्त होने के साथ-साथ देश की शैक्षणिक व्यवस्था तो और भी अधिक क्षतिग्रस्त हुई है क्योंकि इस महामारी के कारण बिना किसी पूर्व सूचना, उचित तैयारी व भविष्य की प्रभूत योजना के बिना ही सभी शिक्षण संस्थान तुरंत प्रभाव से बन्द कर दिए गए थे। शिक्षण संस्थानों का इस तरह अकस्मात बन्द कर दिया जाना व सभी प्रकार की परीक्षाओं का स्थगित कर दिया जाना छात्रों के लिए तो हानिकारक गुजरा ही बल्कि अध्यापकों के लिए तो और अधिक विकट परिस्थितियों एवं विडंबनाओं का संचार कर गया। अतः इन सभी परिस्थितियों, समस्याओं, विडंबनाओं, उलझनों पर विचार करना बहुत जरूरी हो जाता है जो शिक्षण एवं अधिगम के आड़े आती हैं। फलतः मैंने मेरे शोध का विषय भी 'वर्तमान में अध्यापन की समस्याएँ' ही रखा है, जिसके माध्यम से मैं इस अप्रत्याशित महामारी से बनी दारुण स्थिति के कारण अध्यापकों के समक्ष उपस्थित समस्याओं, चुनौतियों व क्लिष्टताओं पर चर्चा कर सकूँ।

आज अध्यापक मुख्यतः चार प्रकार की चुनौतियों से प्रत्यक्षतः जूझ रहा हैः-

1. छात्रों सम्बन्धी समस्या
2. अभिभावकों सम्बन्धी समस्या
3. राजकीय प्रयासों की अल्पता की समस्या
4. आधुनिक यांत्रिकी के अभाव की समस्या

1. छात्रों सम्बन्धी समस्या

सर्व विदित है कि वर्तमान में शिक्षा की प्रत्येक प्रकार की गतिविधि का केंद्रबिंदु छात्र होता है इसलिए शिक्षण की प्रक्रिया का 'आदर्श पहलू' छात्र एवं अध्यापक के सुलभ सम्मिलन व प्रत्यक्ष शिक्षण-अधिगम की आनुभविक प्रचलित प्रणाली से ही सिद्ध होता है। परन्तु जैसा कि हमने देखा है इस महामारी के शुरू होते ही सर्वप्रथम राजकीय आदेशों में प्रथम निर्णय विद्यालयों एवं विद्यालयी गतिविधियों को बन्द करने का था, जिससे छात्रों एवं अध्यापकों का सीधा जुड़ाव स्वतः ही समाप्त हो गया। नन्हे-नन्हे छात्र जो अध्यापक के इर्द-गिर्द मंडरा कर अपनी-अपनी झिझकों सहित अपने समाधान ढूंढ लेते थे, अब ऐसा कर पाने में लाचार हो चुके थे तथा इनसे भी अधिक लाचार हो गए थे वे अध्यापक जो अपने सुदृढ़ शिक्षण-प्रशिक्षण के बल पर देश की भावी पीढ़ी को संवार रहे थे। अध्यापकों का छात्रों से प्रत्यक्ष साक्षात्कार न हो पाना उनके अध्यापन की गम्भीर व बड़ी चुनौती बन चुका था जिसका निदान उसे न केवल खुद खोजना था अपितु छात्रों को भी इस वैकल्प्य से उबारना था।

यद्यपि फोन, कम्प्यूटर, टेलीविजन आदि द्वारा अध्यापकों ने छात्रों को शिक्षित करने का जटिल व मुश्किल प्रयास किया परन्तु यह प्रयास उतना सार्थक व उपयोगी सिद्ध नहीं हो सका जितनी इसकी अपेक्षा की गई थी। इस असफलता के कारण बहुत थे जैसे, सभी विद्यार्थियों के पास जरूरी उपकरणों का न

@2022 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2022, Vol. 01, Issue 01, 89-93
https://doi.org/10.5281/zenodo.7747888

होना, बिजली या इंटरनेट का न होना आदि-आदि। इस प्रयास में असफलता तो मिली ही अपितु इस व्यवस्था ने तो एक अलग ही प्रकार की कुव्यवस्था का भयंकर रूप धारण कर लिया। बच्चे इंटरनेट के न केवल आदि हो गए बल्कि शिक्षा के अतिरिक्त अन्य गैर जरूरी सामग्री की जद में आकर अपना और अधिक नुकसान करने लगे। आंखों की बीमारियाँ लगने लगी व मानसिक विकार भी डराने लगे हैं। कहने का तात्पर्य यही है कि ये वैकल्पिक व्यवस्था ही अंततः जी का जंजाल बन गई जिसमें हमारे नौनिहाल पिसते नजर आ रहे हैं अर्थात फायदे की जगह हानि ही सर्वत्र अधिक हुई है।

2. अभिभावकों सम्बन्धी समस्या

इस बीमारी के आगमन से पूर्व अभिभावक अपने नौनिहालों को विद्यालयों की सुरक्षित चारदीवारी में अध्यापकों को सुपुर्द कर अपनी दैनिक जीवनचर्याओं में निश्चिन्त होकर व्यस्त हो जाया करते थे परन्तु इस महामारी ने उन्हें भी दोहरी मार से रूबरू करवा दिया। एक तो काम-धन्धे, रोजगार व रोजमर्रा की क्रियाएँ थम गई ऊपर से इनकी भावी पीढ़ी अर्थात इनकी संतानें घर की अनचाही दीवारों में कैद हो गई। जहाँ इनका आर्थिक आधार डगमगा गया वहीं इनकी भविष्य की आशाएँ अर्थात इनके बच्चे शिक्षा के अभाव में कुम्हला रहे थे। माता-पिता जहाँ अपने बच्चों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करने में भी अक्षम हो गए थे वहीं बच्चे भी अध्यापकों की प्रत्यक्ष निगरानी के अभाव में भटकाव की ओर बढ़ रहे थे। एक अध्यापक के लिए अपने अध्यापन के हेतु ऐसे पीड़ित माता-पिताओं से भी सामंजस्य स्थापित कर अपना उद्देश्य पूर्ण करना था साथ ही इन अभिभावकों की महामारी जनित आर्थिक तंगी व इससे इनके भविष्य की टूटती आशाओं की कुंठा का भी अध्यापकों को ही सामना करना था।

3. राजकीय प्रयासों की अल्पता की समस्या

महामारियों को आने से रोकना किसी भी देश या समूह के वश की बात नहीं होती है, साथ ही ये महामारियाँ सबके लिए बेहद दारुण परिस्थितियों व अनजानी, अनदेखी मुसीबतों को जन्म देती हैं जिनमें देश की सभी प्रकार की राजकीय योजनाओं व प्रबंधन का चरमरा जाना कोई कौतुक का विषय नहीं होता है। हमारे देश में भी ऐसा ही हुआ। परन्तु चिंतन का विषय तो यह है कि जब पड़ोसी देश चीन में बिगड़े हालात से हमें इसके आगमन की सूचना पूर्व में ही मिल गई थी तब हमने कोई ठोस व कारगर कदम क्यों नहीं उठाए। और अधिक पीड़ादायक स्थिति तो यह थी कि हमने बिना किसी पूर्व तैयारी और अभ्यास के समस्त देश को एकदम रोक देने का औचक निर्णय ले लिया। इस सबके उपरांत भी जब महामारी का प्रकोप मद्धिम पड़ गया था तब भी हमने शिक्षण संस्थानों को सबसे बाद में और बिना किसी व्यवस्थित योजना के खोला। अध्यापकों ने शिक्षण के प्रति पूर्णतः सकारात्मक रवैया अपनाया क्योंकि वे जानते थे कि भविष्य की कच्ची नींव देश के भावी आधार को कमजोर कर देगी और दोषी न होते हुए भी इस सारी कमी का दोष उन्हीं पर आएगा, परन्तु अफसोस! सरकार अध्यापन संबंधित समस्याओं पर कोई भी उचित निर्णय नहीं ले सकी।

4. आधुनिक यांत्रिकी के अभाव की समस्या

@2022 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2022, Vol. 01, Issue 01, 89-93
https://doi.org/10.5281/zenodo.7747888

भारत गांवों में बसता है। इस देश की लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या आज भी गांवों में ही निवास करती है इसलिए भारत को गांवों का 'महा देश' कहा जाए तो कोई मिथ्योक्ति नहीं होगी। लेकिन इसी संदर्भ के दूसरे पक्ष पर विचार करें तो हम पाएंगे कि सुविधाओं के स्तर पर यही ग्रामीण इलाके सबसे पिछड़े, सुविधाहीन व साधनों से वंचित हैं। शहरों में निवास करने वाले विद्यार्थियों को तो यांत्रिकी एवं अधुनातन संसाधनों जैसे फोन, कंप्यूटर, टेलीविजन, इंटरनेट आदि के द्वारा अध्यापकों ने छात्रों के शिक्षण का प्रबंध कुछ हद तक कर दिया था परन्तु गांव में ये सुविधाएँ अत्यंत अल्प हैं जिससे यहाँ का शिक्षण पूर्णतः प्रभावित ही रहा। गांवों में दो जून की रोटी तक की चिंता में सूखने वाले अभिभावक अपने बच्चों के लिए कैसे इन महंगे संचार साधनों को जुटा पाते, फलतः ये छात्र जरूरी शिक्षण से भी वंचित ही रह गए। विडंबना तो यहाँ तक आड़े आई कि माता-पिता ने अपना पेट काटकर अपने बच्चों को ये महंगे उपकरण उपलब्ध करा भी दिए लेकिन इंटरनेट और बिजली के अभाव में ये सब उपकरण व्यर्थ ही पड़े रह गए और इनकी चिंता और कुंठा में और इजाफा कर दिया।

निष्कषर्

वर्तमान समय विपुल संभावनाओं एवं त्वरित प्रगति का है परन्तु ये सभी सम्भावनाएँ एवं प्रगति के अवसर धूमिल हो जाते हैं जब उचित प्रबंधन, तकनीकी व आधुनिक यांत्रिकी पर्याप्त उपलब्ध न हो और तिस पर भी प्रतिकूल निर्णय ले लिए जाएँ। कोरोना महामारी के समय हमारे देश में भी कुछ ऐसा ही घटित हुआ। अन्य देशों ने जहाँ अपने प्रत्येक निर्णय, प्रबंधन एवं योजनाओं में शिक्षा को केंद्रबिंदु बनाकर रखा वहीं हमारे देश का बौद्धिक मंडल इस बारे में चूक कर गया प्रतीत होता दिख रहा है तथा इसी परिस्थिति के कारण अध्यापन बेहद प्रभावित हुआ है। अध्यापक अपने तमाम प्रयासों के उपरांत भी अपने मन-माफिक उद्देश्यों की पूर्ति में लगभग असफल ही रहा है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि शिक्षा व्यवस्था का चरमरा जाना किसी भी देश के पतन का पहला कारक सिद्ध होता है फिर भी अध्यापकों ने तमाम चुनौतियों, विद्रूपताओं, अड़चनों व कुप्रबंधन का सामना करते हुए देश की शिक्षा प्रक्रिया को पटरी पर जमाए रखने का पुरजौर प्रयास किया है। यद्यपि वर्तमान की समस्याएँ बड़ी हैं, परन्तु हमारे देश के अध्यापकों का हौसला व संकल्प इनसे भी बड़ा व सुदृढ है।

तत्पश्चात भी वर्तमान में अध्यापन कार्य में आने वाली समस्याओं को न नकारा जा सकता है और न ही नजरंदाज किया जा सकता है। एक सुदृढ़, सुव्यवस्थित व सुयोग्य कार्य-योजना अध्ययन एवं अध्यापन के लिए निर्मित करनी अत्यावश्यक है।

संदर्भ सूची

सन्तराम बी.ए., मेरे जीवन के अनुभव, सन्तराम बी.ए. फाउंडेशन, शाहजहाँपुर- 242001, पुनर्प्रकाशन 2021

सन्तराम बी.ए., हमारे बच्चे, वि.वै.सं., साधुआश्रम, होशियारपुर, पंजाब, 1950

@2022 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2022, Vol. 01, Issue 01, 89-93
https://doi.org/10.5281/zenodo.7747888

सन्तराम बी.ए., सुखी जीवन का रहस्य, राजकमल प्रकाशन प्रा.लिमिटेड, दिल्ली, 1971

सन्तराम बी.ए., हमारा समाज, सम्यक प्रकाशन, दिल्ली, तृतीय संस्करण, 2007

डॉ. संदीप सिंहमार, कोसों दूर के संक्रमण से अब गांव भी सुरक्षित नहीं, सच कहूँ- समाचार-पत्र, 29 मई 2020

डॉ. संदीप सिंहमार, ढील सरकार ने दी वायरस ने नहीं, सच कहूँ- समाचार-पत्र, 24 मई 2020

डॉ. संदीप सिंहमार, सियासत का ये रंग भी याद रहेगा, सच कहूँ- समाचार पत्र, 21 मई 2020

डॉ. संदीप सिंहमार, दिल चीरती मजदूर की पीड़ा, सच कहूँ- समाचार पत्र, 19 मई 2020

डॉ. संदीप सिंहमार, राहत पैकेज में इनकी भी सुन लो पुकार, सच कहूँ- समाचार पत्र, 14 मई 2020

डॉ. संदीप सिंहमार, लॉकडाउन में दिशा विहीन होती उच्च शिक्षा, सच कहूँ- समाचार पत्र, 19 अप्रैल 2020

डॉ. संदीप सिंहमार, ऑनलाइन एजुकेशन क्लॉसरूम का विकल्प नहीं, सच कहूँ- समाचार पत्र, 17 मई 2020